Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, MAY-JUNE, 2019, VOL- 6/51

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के पारस्परिक कक्षागत व्यवहारों का अध्ययन

विरेन्द्र कुमार

शोध छात्र, (शिक्षा विद्यापीठ), म. गां. अं. हिं. वि. वि. वर्धा, महाराष्ट्र– 442001.

Email- airvirendra@gmail.com

Abstract

प्रस्तुत शोध आलेख के माध्यम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अंतर्गत शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के कक्षागत व्यवहारोंको समझने का प्रयास किया गया है। इसकी सहायता से यह जानने की कोशिश की गयी है कि शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार का स्तर क्या है तथा उन व्यवहारों के साथ विद्यार्थी अपने व्यवहारों को किस तरह संबंधित करते हैं।सामान्यतः यह देखा जाता है कि शिक्षक कक्षा में पहल करतेहैं तथा विद्यार्थी संबंधित अनुक्रिया करते हैं। लेकिन कभी-कभी विद्यार्थी कक्षा में पहल करते हैं तथा शिक्षक संबंधित अनुक्रिया करते हैं। इसी प्रकार कक्षागत शिक्षण के समय स्वयं विद्यार्थियों के मध्य भी चर्चाएं होतीरहती हैं। इस प्रकार शिक्षक-विद्यार्थी तथा विद्यार्थी-विद्यार्थी के पारस्परिक अंतःक्रियाओं से कक्षा को गतिशील रखा जाता है।प्रस्तुत आलेख में सम्प्रेषण का भी विस्तृत वर्णन किया गया है, क्योंकि समस्त शिक्षण शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के आपसी सम्प्रेषण की सहायता से ही सम्पन्न होता है। इस संप्रेषण के अंतर्गत शाब्दिक एवं अशाब्दिक संप्रेषण सम्मिलित होते हैं। अतः प्रस्तुत शोध आलेख शिक्षक-विद्यार्थी के पारस्परिक कक्षागत व्यवहार,संप्रेषण की संपूर्ण प्रक्रिया, कक्षागत व्यवहारोंका विश्लेषण करने का सुक्ष्म प्रयास करता है।

प्रमुख प्रत्यय/शब्दावलियाँ:संप्रेषण, कक्षागत व्यवहार, शाब्दिक एवं अशाब्दिक व्यवहार इत्यादि ।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :

शिक्षण का अर्थ शिक्षक व छात्र के मध्य कक्षा में होने वाली अन्तःक्रिया से है। कक्षा में विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ घटित होती हैं, इन घटनाओं का बोध, वास्तविक कक्षाओं के

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निरीक्षण से ही सम्भव है। निरीक्षण एक ऐसी प्रक्रिया हैजिससे कक्षागत व्यवहारों का अध्ययन वस्तुनिष्ठ एवं क्रमबद्ध रूप में किया जा सकता है। इस प्रविधि की सहायता से शिक्षक तथा विद्यार्थियों के मध्य होने वाली कक्षागत व्यवहारों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है(शर्मा, 2015)। सामान्यतः कक्षा को किसी भी समाज के लघु रूप में स्वीकार किया जाता है,जिसमेंशिक्षक एवं विद्यार्थीके बीचअंतर्वैयक्तिकसंवाद की प्रक्रिया पूर्ण होती है। कक्षागत अंतर्वैयक्तिक संवाद विभिन्न कारकों द्वारा नियंत्रित की जाती है। इन कारकों में मुख्य रूप से शिक्षक,विद्यार्थी,भाषा, कक्षागत वातावरण एवं शैक्षिक उद्देश्यइत्यादि सम्मिलित होते हैं(कोथाईनायकी, 1994)।अतः इन सभी के बीच परस्पर अंतःक्रिया का कार्य संपन्न होता है। अन्तःक्रिया के अंतर्गत दो या दो से अधिक प्रतिभागियों के बीच किसी विषय पर संवाद का आदान-प्रदान होता है(संपथ, 2007)। इसी प्रकार कक्षा में भी शिक्षक एवं विद्यार्थी के बीच किसी विषय के सापेक्ष अंतःक्रिया का कार्य किया जाता है। शिक्षकों को अपने स्वयं के ज्ञान को विकसित करने के लिए भी विद्यार्थियों से अन्तःक्रिया करनी चाहिए, क्योंकि यदि यह अन्तःक्रिया प्रभावी होगी तथा विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से इसमें प्रतिभाग करेंगे तो उनके छिपे हुए विभिन्न कौशल भी बाहर आ सकते हैं(कोथाईनायकी, 1994)। अतः शिक्षक एवं विद्यार्थी के बीच कक्षागत अंतःक्रिया का सरलता पूर्वक संपन्न होना आवश्यक है। वर्तमान समय में कक्षागत अंतःक्रिया की प्रविधियों को समझना भी अत्यंत आवश्यक है। बेदी (1992)ने 'क्लासरूम इंटरैक्सन पैटर्न इन रिलेसन टू सम टीचर्स कैरेक्टरस्टिक्स एंड दियर इफेक्ट ऑन लर्निंग आउटकम्स ऑफ साइंस स्टूडेंट एट हाईस्कूल लेवल'विषय पर कक्षागत

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अन्तःक्रिया के साथ शिक्षकों की विशेषताओं का संबंध एवं इसका विद्यार्थियों की उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि निम्न प्रभावशाली शिक्षकों की अपेक्षा उच्च प्रभावशाली शिक्षकों की कक्षा में विद्यार्थियों की अनुक्रिया अधिक होती है। विद्यार्थियों के विचारों की स्वीकार्यता,विद्यार्थियों में सुधार, शिक्षक प्रत्यक्ष व्यवहार, शिक्षक निर्देशन, इत्यादि में निम्न प्रभावशाली शिक्षक और उच्च प्रभावशाली शिक्षक के बीच में काई अंतर नही पाया जाता है। लेकिन निम्न प्रभावशाली शिक्षकों की कक्षा में विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से बातचीत नहीं कर पाते हैं,जिससे उनकी कक्षा में सक्रियता कम रहती है(बेदी, 1992)**।**

शिक्षण क्या है, यह एक साधारण सा प्रश्न प्रतीत होता है, लेकिन सावधानीपूर्वक परीक्षण से पता चलता है कि एक सामान्य शिक्षण के लिए विभिन्न शोधकर्त्ताओं, विशेषज्ञों और शिक्षकों द्वारा प्रस्तावित विचार अलग-अलग है। जिसकी पुष्टि विभिन्न परिभाषाओं से भी होती है।स्मिथ, (1961)**के अनुसार 'शिक्षण सीखने के लिए प्रेरित कार्यो का एक तंत्र है।'स्टालुरोव एवं पहेल** (1963) **ने शिक्षण को परिभाषित करते हुए कहा है कि 'शिक्षण मूल रूप से एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें कम से कम दो लोगों, एक शिक्षक और एक छात्र के बीच संचार और बातचीत शामिल है।'इस संबंध में नार्मन ए. फ़्लैंडर्सने शिक्षण को परिभाषित करते हुए कहा है कि- 'शिक्षण एक परिसंवादात्मक प्रक्रिया है जिसमें अंतःक्रिया का अर्थ शिक्षक और छात्रों दोनों की भागीदारी से है जिससे दोनों को लाभ होता है, अंतःक्रिया में वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बातचीत होती है।' जबकि एन. एल. गेज**(1964) **के अनुसार- 'शिक्षण किसी व्यक्ति की व्यवहार क्षमता को बदलने के लिए**

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अन्तःवैयक्तिक प्रभाव है।' इन्होंने शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच पारस्परिक संबंधों पर अधिक बलदिया है। इनके अनुसार शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यवहार को बदलना है। उक्त समस्त परिभाषाओं से शिक्षण, शिक्षक एवं विद्यार्थी व्यवहार के संबंध में गहन जानकारी प्राप्त होती है।

संम्प्रेषण की अवधारणा एवं प्रक्रिया:

संप्रेषण का प्रारंभ मानव जीवन के आविर्भाव के साथ होता है। लेकिन हम यह कह सकते हैं कि संप्रेषण का इतिहास कदाचित इससे भी पुराना है।पशु-पक्षी आदि सजीव अपनी आवश्यकतानुसार संप्रेषण करते रहे हैं। आदिमानव इशारों और ध्वनियों के माध्यम से संप्रेषण करता था, आगे चलकर मनुष्य नेभाषा और उसे अभिव्यक्त करने वाले संकेत-चिह्नों को अपना साधन बनाया। समयके साथ तकनीकी विकसित हुई, संप्रेषण की प्रक्रिया में परिवर्तन आया और संप्रेषणमाध्यम भी अद्यतन हुए । मनुष्य ने संप्रेषण की प्रक्रिया अन्तःवैयक्तिक संप्रेषण सेप्रारंभ की,जो समूह संप्रेषण से आगे बढ़ती हुई आज प्रिंट, इलैक्ट्रानिक जैसे माध्यमतक परिवर्तित हो गई है। इसका तात्पर्य है कि वर्तमान में यह एक से अनेक लोगों तक अर्थात जन संप्रेषण तक विकसित हो गई है।बीसवीं शदी के पूर्वार्ध में राजनीतिशास्त्र, मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र से जुड़े विद्वानों ने अपनी आवश्यकता के अनुरूप संप्रेषण पर व्यापक कार्य किया जिसके परिणामस्वरूप आज संप्रेषण एक अनुशासन के रूप स्वीकृत होचूकी है।एंडरसन ने सम्प्रेषण को परिभाषित करते हुए कहा है कि- 'सम्प्रेषण एक गत्यात्मक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने हाव-भाव, मुख-मुद्रा तथा विचारों आदि का परस्पर आदान-प्रदान करते हैं तथा इस प्रकार से

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्राप्त विचारों अथवा संदेशों को समान तथा सही अर्थों में समझने और प्रेषण करने में उपयोग करते हैं।' सम्प्रेषण को एक कला के रूप में भी परिभाषित किया जाता है। इसके अनुसार सम्प्रेषण एक ऐसी कला है जिसके माध्याम से एक व्यक्ति अपने विचारों एवं संवेदनाओं को दूसरे व्यक्ति तक सरलता से पहुंचा पाता है(कुलश्रेष्ठ, 2010)**।**

उपरोक्त तथ्यों का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि सम्प्रेषण में संप्रेषक और प्रापक के बीच अंतःक्रिया होती है। इसके माध्यम से एक व्यक्ति या समूह अपने विचार सन्देश, मनोभाव, सूचना आदि के रूप में दूसरे व्यक्ति या समूह तक पहुंचाता है, जिसे ग्रहीता (प्रापक) प्राप्त करता है, सन्देश को समझता है और अपनी प्रतिक्रिया सन्देश भेजने वाले को देता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि- 'सम्प्रेषण विचार-विनिमय करने, अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने, दूसरों की बात सुनने तथा विचारों, अभिवृत्तियों संवेदनाओं और सूचनाओं एवं ज्ञान के विनिमय करने की एक प्रक्रिया है' (शर्मा, 2015)**।**

शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के बीच कक्षागत सम्प्रेषण :

किसी भी विद्यालय में विचारों एवं तथ्यों के सम्प्रेषण के लिए सर्वाधिक उपयुक्त स्थान कक्षा होती है। किसी भी कक्षा में शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मध्य शाब्दिक या अशाब्दिक रूप में विचारों, भावों या तथ्यों को एक दूसरे को आदान-प्रदान करना हीं कक्षागत सम्प्रेषण कहलाता है।शिक्षक-विद्यार्थी के बीच और विद्यार्थी-विद्यार्थी के बीच की अंतःक्रिया विद्यार्थियों की उपलब्धि के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।वर्तमानसमयके शोध इस बात परकेन्द्रीत हो रहे हैं कि शिक्षक-विद्यार्थी और विद्यार्थी-विद्यार्थी के बीच सम्प्रेषण को प्रभावशाली बनाने के लिए किस प्रकार के

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बदलाव किये जा सकते हैं। जिससे शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के बीच मौखिक संवाद की प्रक्रिया सुगमतापूर्वक संचालित हो।यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इसकी सहायता से शिक्षण कार्य प्रभावशाली ढ़ंग से संपन्न होता है।शिक्षणअधिगम कार्य प्रभावशाली होने से विद्यार्थी किसी भी विषय को आसानी से सीख सकते हैं। कक्षा में शिक्षक नेतृत्वकर्त्ता की स्थिति में होता है। अतः कक्षागत अंतःक्रिया प्रायः शिक्षकों द्वारा ही प्रारम्भ की जाती है। शिक्षक को प्रभावशाली तभी कहा जा सकता है जब कक्षा में शिक्षक-विद्यार्थी तथा विद्यार्थी-विद्यार्थी एक-दूसरे से अंतःक्रिया करते हो। कक्षागत अंतःक्रिया में शिक्षक-विद्यार्थी व्यवहार एक दूसरे से सहसंबंधित होते हैं, जो क्रियात्मक रूप से अन्योन्याश्रित भी होते हैं। अतः कक्षागत व्यवहारों का अध्ययन एवं विश्लेषण शिक्षक-विद्यार्थी व्यवहार और उसकी परस्पर अन्योन्याश्रितता का अवलोकन करके ही किया जा सकता है।

कक्षागत व्यवहार का स्वरूप:

आधुनिक काल में शिक्षण से तात्पर्य विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करना मात्र ही नही है बल्कि शिक्षक-विद्यार्थी के मध्य अन्तःक्रिया से है। फ्लैण्डर्स के अनुसार शिक्षण एक सामाजिक क्रिया है जो शिक्षक व विद्यार्थियों के मध्य अन्तःक्रिया से सम्पन्न होती है। शिक्षण प्रक्रिया में एक ओर विद्यार्थी सीखने वाला है तो दूसरी ओर शिक्षक सिखाने वाला होता है। कक्षा में शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक, विद्यार्थियों का अवलोकन करता है, उनकीभावनाओं की अनुभूति करता है तथा अधिकाधिक समझने का प्रयास करता है।विषयवस्तु को विद्यार्थियों केसम्मुख प्रस्तुत करता हैतथा उसका विश्लेषण एवं

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्याख्या करता है। अतः इन सभी शिक्षण क्रियाओं मेंभाषा का प्रयोग करना पडता है। शिक्षण मुख्यतः एक शाब्दिक व्यवहार होता है यद्यपि शिक्षक के चेहरे केहाव-भाव, शारीरिक क्रियायें आदि जैसे अशाब्दिक व्यवहार भी कक्षा में होते है परन्तु निरीक्षणों से यह पताचलता है कि कक्षा शिक्षण में शाब्दिक व्यवहार की ही प्रधानता होती है।शिक्षण विभिन्न क्रियाओं की सुव्यस्थित प्रणाली है जिसमें शिक्षक-विद्यार्थियों के बीच पारस्परिकक्रियायेंकी जाती है। शिक्षक और विद्यार्थियों के पारस्परिकअन्तःक्रिया को शिक्षण कहते हैं। शिक्षक-विद्यार्थी एवं विद्यार्थी-विद्यार्थी के मध्य शाब्दिक सम्प्रेषण के निरीक्षण तथा अंकन विधि को ही कक्षाअन्तःक्रिया विश्लेषण प्रविधि भी कहते हैं। कक्षागत अंतःक्रिया मुख्यतः दो रूपों में सम्पन्न होती है

(अ) कक्षागत शाब्दिक व्यवहार

कक्षा में जब शिक्षक तथा विद्यार्थी बोलकर चर्चा करते हैं तो इस व्यवहार को शाब्दिक अन्तःक्रियाकहते हैं। इसमें अभिव्यक्ति का माध्यम मौखिक, लिखित तथा प्रतीकात्मक होता है। प्रायः शाब्दिकअन्तःक्रिया को दो भागों में विभक्त किया गया है।पहला प्रत्यक्ष- यह उस का प्रकार व्यवहार होता है, जिसमें शिक्षक कक्षा में अपना प्रभाव व प्रभुत्व स्थापित करने की चेष्टा करता है, विद्यार्थियों के विचारों व व्यवहारों की आलोचना करता है, कक्षा में विद्यार्थियों को स्वतंत्रतापर्वूक बोलने का अवसर प्रदान नही करता है। इसमें विद्यार्थी के वैयक्तिक-भिन्नता के मनोवैज्ञानिक तथ्य को स्वीकार नही किया जाता है। इस प्रकार विद्यार्थियों की इच्छा, स्तर, मूल्य, उद्देश्य, निर्णय, कल्याण केलिये कोई स्थान नही होता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों के विकास एवं शैक्षिक उपलब्धि में

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बाधाउपस्थित होती है।दूसरा अप्रत्यक्ष- यह उस प्रकार का व्यवहार होता है जिसमें शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों को कार्य करने, उन्हें विचारों को अभिव्यक्त करने की स्वतन्त्रता प्रदान करता है। शिक्षक, विद्यार्थी के विचारों को स्वीकार करता है तथा उनका स्पष्टीकरण करता है, वह अपनेविचारों को मानने के लिए विद्यार्थियों को बाध्य नहीं करता है। कक्षा में शिक्षक कम बोलता है और विद्यार्थियों को बोलने का अधिक अवसर प्रदान करता है। विद्यार्थियों की समस्याओं को समझ कर उनका समाधानकरने का प्रयास करता है। ऐसा शिक्षक प्रश्न अधिक पूछता है जिससे विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया में क्रियाशील रहने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। जयंती (2002)**नें 'क्लासरूम इंटरैक्सन विथ रिफरेंस टू इंग्लिस लिटरेचर टीचिंग एट दी अंडर ग्रेजुअट लेवल' विषय पर अंग्रेजी साहित्य शिक्षण की कक्षागत अन्तःक्रियाओं का अध्ययन कार्य कियाऔर बताया कि अंग्रेजी साहित्य की कक्षा में शिक्षक-विद्यार्थी विभिन्नप्रकार के संवादों में शामिल होतेव अन्तःक्रिया करते हैं।शिक्षक-विद्यार्थी के बीच कक्षागत अंतःक्रियामें शाब्दिकसम्प्रेषण द्वारा विद्यार्थियों की उपलब्धि का निर्धारण होता है।शिक्षक कुछ प्रबंधन तकनीक का प्रयोग पूरी कक्षा के लिये करता है। साहित्य शिक्षण के दौरान प्रकरण के अनुरूप शिक्षकों द्वारा भूमिका का निर्वाह किया जाता है, यह कार्य शिक्षण परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग होता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि शाब्दिक संप्रेषण कक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।**

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(ब) कक्षागत अशाब्दिक व्यवहार

अशाब्दिक अन्तःक्रिया वह व्यवहार है जिसमें विद्यार्थी तथा शिक्षक के मध्य बोलकर भावों व विचारों का सम्प्रेषण नही होता है, अपितु हाव-भाव व संकेत के द्वारा होता है। विद्यार्थियों को प्रोत्साहितकरने के लिये शिक्षक का सिर हिलाना, विद्यार्थियों को बोलने से रोकने के लिये हाथों, अंगुली का प्रयोग करना,मुस्कराना आदि सभी क्रियायें विद्यार्थियों को शिक्षक के विचारों व भावों से अवगत कराती है। किसी विद्यार्थीके गलत काम पर शिक्षक यदि क्रोध से लाल पीला होकर उसकी ओर देखता हैतो निश्चय ही विद्यार्थीसमझ जाता है कि उसे वह कार्य नही करना चाहिए। किसी विद्यार्थी द्वारा कार्य किये जाने पर शिक्षक यदिचेहरे पर मुस्कराहट लाता है, तनाव को कम करता है और सिर हिलाता है तो विद्यार्थी उस प्रकार से कार्यकरने हेतु अधिक प्रोत्साहित होता है।

शिक्षक-विद्यार्थी परस्पर कक्षागत व्यवहार

इस क्रिया में कक्षा अध्यापन के दौरान शिक्षक-विद्यार्थी के मध्य विशेष बिन्दुओं पर चर्चा होतीहै। कक्षा में शिक्षण के अंतर्गत शिक्षक विद्यार्थियों का अवलोकन करता है, उनकी भावनाओं की अनुभूति करता है तथा उन्हे अधिकाधिक समझने का प्रयास करता है।वह विषयवस्तु को विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुतकरता है, उसका विश्लेषण एवं व्याख्या करता है। इन सभी शिक्षक क्रियाओं में भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। शिक्षक का वार्तालाप पढ़ाये गए पाठ से संबंधित होता है। विद्यार्थी उनसे अंतःक्रिया करते हैं। शिक्षक सर्वप्रथम कक्षा में विद्यार्थियों से प्रश्न करते हैं, उनके जवाब लेकर यह देखने का कार्य करते हैं कि कहीं कोई गलती तो नहीं है। यदि कहीं गलती होती है तो उसे ठीक करते

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हैं और कभी-कभी उत्तर श्यामपट्ट पर लिखते हैं। इस प्रकार से शिक्षक-विद्यार्थी के मध्य अंतःक्रिया संपन्न होता है।

विद्यार्थी-विद्यार्थी परस्पर कक्षागत व्यवहार

कक्षागत अन्तःक्रिया के समय विद्यार्थी-विद्यार्थी के मध्य भी आपस में वाद-विवाद या चर्चाएं होतीरहती हैं। कक्षा में प्रायः विद्यार्थी अपने सहपाठी या समूह के साथ बैठते हैं या कभी-कभी विद्यार्थियों का अलग-अलगसमूह बना दिया जाता है।कक्षागत अन्तःक्रिया के समय विद्यार्थी आपस में प्रायः निम्नलिखित प्रकार की चर्चाएं एवं वाद-विवादकरते हैं-

- **पढ़ाई जा रही विषयवस्तु पर- कक्षा में पढ़ाई जा रही विषयवस्तु के कठिन बिन्दुओं परविद्यार्थीआपस में चर्चा करके समस्या का समाधान निकालने का प्रयास करते हैं और यदिसमस्या का समाधान नही निकाल पाते हैं तो फिर शिक्षक से पूछते हैं।**
- **गृहकार्य पर- कक्षा में पढ़ाते समय शिक्षकविद्यार्थियों को गृहकार्य भी देते हैं जिसकी चर्चा विद्यार्थीआपस में करते हैं।**
- **पाठ्यसहगामी क्रियाओं पर- विद्यालय में हो रही पाठ्यसहगामी क्रियाओं के बारे में विद्यार्थी आपस में चर्चा करते हैं। वे विभिन्न गतिविधियों के दौरान चित्रकारी, कहानी, कविता, गीत, पेन्टिंग,आदिमौलिक/उल्लेखनीय कार्यों को फोल्डर/फाइल में व्यवस्थितकर पोर्टफोलियो के रूप में संधारितकरते है। पोर्टफोलियो में संधारित की गई विभिन्न गतिविधियों को बच्चे अपने तथा अपने साथियोंके कार्यों का अवलोकन कर वाद-विवाद एवं चर्चाएं भी करते हैं।**

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपरोक्त बिन्दुओं के अलावा कभी-कभी बच्चे एक दूसरे से आपस में विद्यालय के वातावरण, पारिवारिकवातावरण, सामान्य ज्ञान, शैक्षिक भ्रमण, विद्यालय में हो रहे खेलकूद आदि पर भी चर्चा करते रहते हैं।

शिक्षकों एवंविद्यार्थियों के पारस्परिक कक्षागत व्यवहारों का विश्लेषण:

शिक्षणअधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जिसकी पहचानकरते हुए कई तरीकों से वर्णन किया जा सकता है। एक तरीका यह है कि शिक्षक के वास्तविक कक्षागत व्यवहार का वर्णन करना जो सामान्यतः कक्षा शिक्षण के दौरान दृष्टिगत होता है। आमतौर पर यह देखा जाता है कि शिक्षक द्वाराकिए जाने वालेसमस्त कक्षागत व्यवहार विद्यार्थियों के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। शिक्षक विद्यर्थियों के विचारों को स्वीकार्यता प्रदान करते हैंतथा उन्हें प्रोत्साहित भी करते है। विभिन्न अवसरों पर यह देखा जाता है कि जब शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाता है, तब विद्यार्थी अपने विचारों को कक्षा में स्वतंत्रतापूर्वक रखने को उत्साहित होते हैं।

कक्षा में घटित होने वाली शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के समस्त व्यवहारों का अवलोकन किया जाता है। तत्पश्चात अंतःक्रिया विश्लेषण प्रविधि की सहायता से उनके कक्षागत व्यवहारों का विश्लेषण किया जाता। अंतःक्रिया विश्लेषण प्रविधि एनकोडिंग-डिकोडिंग (संकेतीकरण एवं संकेतवाचन) के सिद्धान्त पर कार्य करती है। जिसके द्वारा कक्षागत व्यवहारों का विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है। इस संबंध में किये गए विभिन्न शोध अध्ययनों से पता चलता है कि शिक्षक कक्षाओं में विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक समय बोलते हैं जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों को अंतःक्रिया करने का अवसर कम प्राप्त

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

होता है। इस प्रकार की शिक्षक-विद्यार्थी अनुक्रिया छात्रों को सीमित व नियंत्रित तो करती ही है साथ ही उन्हें अपने विचारों को स्वतंत्रतापूर्वक रखने के अवसर को कम कर देती है। उक्त समस्त व्यवहारों के अंकन तथा अंतःक्रिया विश्लेषण के पश्चात प्रभावी कक्षागत व्यवहार या अंतःक्रिया के लिए सुझाव प्रदान किया जाता है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त समस्त विश्लेषण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कक्षा में शिक्षक केंद्रीय भूमिका में होता है। शिक्षण की समस्त प्रक्रिया उसी पर निर्भर करती है। वह कक्षा में पहलकर्त्ता के रूप में होता है जबकि विद्यार्थी उससे संबंधित अनुक्रिया करता है। लेकिन विद्यार्थी भी कभी-कभी पहलकर्त्ता के रूप में कार्य करता है उस स्थिति में शिक्षक संबंधित अनुक्रिया करता है। शिक्षक के कक्षागत व्यवहार की जटिलता कक्षागत अंतःक्रिया को जटिल बना देती है। अतः शिक्षक के व्यवहार का कक्षा में लचीला होना अत्यंत आवश्यक है। यदि शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों को प्रतिभाग करने के लिए समान अवसर प्रदान करता है, उनके विचारों को सम्मान देता है, तथा उन्हें प्रोत्साहित करता है तो विद्यार्थी भी स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचारों को कक्षा में रखते हैं जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया गतिशील रूप में संचालित होती है। शाब्दिक-अशाब्दिक व्यवहारों के संप्रेषण से पारस्परिक कक्षागत व्यवहार या अंतःक्रिया बेहतर ढ़ंग से संपन्न होती है। कक्षागत अंतःक्रिया विश्लेषण की सहायता से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के कक्षागत व्यवहारों का मापन किया जाता है तथा प्रभावी कक्षागत व्यवहार या अंतःक्रिया के लिए सुझाव प्रदान किए जाते हैं।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

कोथाईनायकी, एस. (1994). क्लासरूम इंटरैक्सन एण्ड लैंग्वेज यूज ए केस स्टॅडी ऑफ इंग्लिश टीचिंग ईन सेलेक्टेड स्टैंडर्ड ए लिंगुईस्टिक स्टॅडि. पी-एच.डी. शोध प्रबंध(अप्रकाशित). भाषा विभाग. भारथियार विश्वविद्यालय कोयंबटूर.

कुमार, सुरेंदर (2008).इन्टरैक्सन एनालिसिस ऑफ क्लासरूम बिहैवियर ऑफ हाई एंड लो कम्पिटेंसी मैथेमेटिक्स टीचर्स इन दी स्टेट ऑफ हरियाणा.पी-एच.डी. शोध प्रबंध(अप्रकाशित).शिक्षाशास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक.

कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2010). शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार.आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स,पेज: 255-260.

पवनसाम, आर (1975). टीचर बिहैवियर एंड क्लासरूम डाइनेमिक्स .पी-एच.डी. शोध प्रबंध(अप्रकाशित). शिक्षाशास्त्र विभाग. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा.

बेदी, एस. (1992). क्लासरूम इंटरैक्सन पैटर्न इन रिलेसन टू सम टीचर्स कैरेक्टरस्टिक्स एण्ड दियर इफेक्ट ऑन लर्निंग आउटकम्स ऑफ साइंस स्टूडेंट एट हाईस्कूल लेवल. पी-एच.डी. शोध प्रबंध(अप्रकाशित).पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़.

भट्टाचार्य, जी. सी. (2012) अध्यापक शिक्षा.आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन.

शर्मा, आर.ए. एवं चतुर्वेदी, शिखा(2015) . शिक्षा तकनीकी के आधार.मेरठः आर लाल बुक डिपो. पेज: 836-843.

शर्मा, आर.ए. एवं चतुर्वेदी, शिखा(2011). अध्यापक शिक्षा. मेरठः लायल बुक डिपो.

शरीफ, अब्दुल्लाह (2012).ए क्रिटिकल स्टॅडी ऑफ प्रिंसिपल एंड प्रैक्टिस ऑफ क्लासरूम इंटरैक्सन इन इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग एट सेकेंण्डरी लेवल इन इराकी स्कूल्स.पी-एच.डी. शोध प्रबंध(अप्रकाशित). शिक्षाशास्त्र विभाग.अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़.

सक्सेना, एन. आर., मिश्रा, के. एवं मोहंती, आर. के. (2012). शिक्षा तकनीकी,मेरठ: आर लाल बुक डिपो.

सिंह, एच. (1987).इफेक्ट ऑफ ट्रेनिंग थ्रो फ्लैंण्डर्स इंटेरैक्सन एनालिसिस टेक्निक ऑन क्सासरूम बिहैवियर ऑफ इनसर्विस सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स इन रिलेसन टू सम पैसेज वेरिएबल्स.पी-एच.डी. शोध प्रबंध(अप्रकाशित).शिक्षाशास्त्र विभाग.पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़.

सिंह, प्रभाकर (1985).ए फैक्टर एनालिटिक ऑफ टीचिंग विहैवियर.पी-एच.डी. शोध प्रबंध(अप्रकाशित). शिक्षा संकाय. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सुहाग, जगदीश कुमार (2016).इंटरैक्सन एनॉलिसिस ऑफ क्सासरूम बिहैवियर ऑफ इफेक्टिव एंड इनइफेक्टिव हिस्ट्री टीचर्स.पी-एच.डी. शोध प्रबंध(अप्रकाशित). शिक्षाशास्त्र विभाग.महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक.

संपथ, के. पनीरसेल्वम, ए. एण्ड संथानम. (2007-08).इंट्रोडक्शन टू एजुकेसनल टेक्नोलाजी.नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लि. 51-59.

सिंह, प्रभाकर(1985).ए फैक्टर एनालिटिक ऑफ टीचिंग विहैवियर. पी-एच.डी. शोध प्रबंध(अप्रकाशित). शिक्षा संकायकाशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी.

संजय (2013). प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कक्षागत शिक्षण व्यवहार का अध्ययन. पी-एच.डी. शोध प्रबंध(अप्रकाशित). शिक्षा संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी.

श्रीवास्तव, एस. एवं शर्मा, आर. (2018).शिक्षा के तकनीकी परिप्रेक्ष्य. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies